ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 19 अंक 48 | कुल पृष्ठ-8 | 15 से 21 जनवरी, 2026 | दयानन्दाब्द 201 | सृष्टि सम्वत् 1960853126 | सम्वत् 2082 | मा. कृ-12

झारखण्ड के चतरा जिले में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस एवं तीन दिवसीय प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन सफलतापूर्वक हुआ सम्पन्न

सम्मेलन की अध्यक्षता झारखण्ड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य कौटिल्य ने की

सम्मेलन में मुख्य अतिथि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी रहे

आर्य समाज किसुनपुर, चतरा, झारखण्ड में अमर हुतात्मा स्वानी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के साथ–साथ तीन दिवसीय प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन बहुत ही सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। झारखण्ड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री जीवन ओप जी के सानिध्य में एवं उनके आशीर्वाद से तीन दिन का कार्यकम व्यवस्थित रूप से चलता रहा। इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अलावा अन्तर्राष्ट्रीय कवि डा० सारस्वत मोहन मनीषी, विद्वान् प्रवक्ता आचार्य योगेश –बंगाल, पंडित सत्यप्रकाश आर्य भजनोपदेशक दानापुर–बिहार, आचार्य धर्मवीर, आचार्य अरुण, आचार्य उपेन्द्र, आचार्य मोहन, आचार्य इन्द्रजीत, बिदुषी मैत्रेयी आर्या, श्यामसिंह आर्य (लक्सर), श्री पूर्णचन्द्र आर्य, श्री वरुण बिहारी, श्री उत्तम प्रसाद आर्य, श्री प्रदीप कुमार आर्य, श्री चिन्तामणी प्रसाद आर्य, श्री सुरेन्द्र प्रसाद आर्य, यादव राणा श्री चन्द्रदेव साव, श्री संजय प्रसाद आर्य, श्री सत्यदेव आर्य, श्री विद्यासागर आर्य, श्री पवन कुमार आर्य, श्री अमरजीत चन्द्रवंशी, श्री बालेश्वर शास्त्री आदि विद्वानों एवं महानुभाओं की गरिमामयी उपस्थिति रही।

इस तीन दिवसीय प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में प्रतिदिन 51 कुण्डीय महायज्ञ का प्रबन्ध किया गया था जिसमें प्रत्येक कुष्ड पर चार जोड़े यजमान और उनके परिवार के सदस्य मिलाकर एक कुण्ड पर 16 माजिक बैठ रहे थे। इस प्रकार से प्रतिदिन इतनी कड़ाके की ठंड में में भी 800 सदस्यों के साथ–साथ आर्ष कन्या गुरुकुल एवं आर्ष गुरुकुल हजारीबाग के 250 ब्रह्मचारी एवं बमचारिणियाँ और विद्यार्थियों के माता–पिता यज्ञ करते रहे। इस प्रकार का बृहद यज्ञ निरन्तर तीन दिन तक चलता रहा। यज्ञ के ब्रणा वैदिक विद्वान, दोनों गुरुकुलों के कुलपति और प्रान्तीय सभा के प्रधान आचार्य कौटिल्य रहे।

सम्पूर्ण यज्ञ की व्यवस्था एवं सम्पूर्ण प्रबन्धन का कार्य चतरा जिला आर्यसभा के प्रधान और क्षेत्रीय पुरोहित पं रोहित पं० गिरधारी प्रसाद आर्य कर रहे थे।

पहले दिन के आयोजित युवा सम्मेलन में युवा विद्धान आचार्य योगेश जी ने कार्यक्रम में उपस्थित सैकड़ों युवाओं को सम्मोधित करते हुए कहा कि जिस प्रकार से देश की आजादी में आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती एवं उनके कान्तिकारी ग्रन्थों से प्रेरणा लेकर अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था उसी प्रकार आज भी देश की दशा और दिशा परिवर्तन में युवाओं को अपनी भागीदारी निश्चित करनी चाहिए।

दूसरे और तीसरे दिन की निरन्तर तीन सभाओं के अन्तर्गत महिला सम्मेलन में अपने उद्बोधन में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने लगभग 1500 उपस्थित महिलाओं की सम्बोधित करते हुए कहा कि किस प्रकार आर्य समाज ने और महर्षि दयानन्द दयानन्द जी ने महिलाओं के लिए कार्य किया था। बाल विवाह की समस्या हो, सती प्रथा की समस्या हो, अनमेल विवाह की समाया हो, स्त्री शिक्षा की समस्या हो इन सभी समस्याओं का समाधान आर्य समाज ने शेष पृष्ठ 6 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

आधुनिक वैश्वीकरण में संस्कृत का महत्त्व

– श्रीमती डॉ. कमल आनन्द

संस्कृत और संस्कार संस्कृति के संघटक हैं। किसी भी देश या राष्ट्र की जनभावना और जीवनक्रम के सुव्यवस्थित व सुरचित स्वरूप को उस राष्ट्र की संस्कृति कहते हैं। मनस्वी साहित्यकारों ने, चिन्तकों ने, राजनीतिज्ञों ने संस्कृति की विभिन्न परिभाषाएं दी हैं। श्री जवाहर लाल नेहरू ने कहा - मन और आत्मा की विशालता और व्यापकता को संस्कृति कहते हैं। काका कालेलकर संस्कृति को समाज की आत्मा मानते हैं। हजारी प्रसाद द्विवेदी के मतानुसार संस्कृति मनुष्य की विविध साधनाओं की सर्वोत्तम परिणति है। अतः संस्कृति उस क्रिया समूह का नाम है जिसके द्वारा विभिन्न व्यक्ति मानवजाति के सृजनात्मक जीवन में भाग लेते और उसे समृद्ध करते हैं। सच्ची संस्कृति तो मस्तिष्क, हृदय और हाथ का अनुशासन है और यह अनुशासन भारतीय संस्कृति की पहचान रही है। हमारी संस्कृति संस्कृत से ही सम्भूत और पल्लवित हो कर जी रही है। कर्मनिष्ठा, विश्वबन्धुता, समन्वय आदि जीवनदायी तत्वों की संवाहिका संस्कृत भाषा है। आज इस वैश्वीकरण में संस्कृत की उपयुक्तता और भी बढ़कर सामने आ रही है क्योंकि इसी के कारण हमारी संस्कृति इतिहास के अनेक विकट झंझावातों में जूझने के बाद भी अपने स्वत्व को अक्षुण्ण रखने में समर्थ रही है। संस्कृत जीवन प्रक्रिया की थाती है, गौरव है। मानवता के संरक्षण, परिवर्धन और परिष्कार के लिए जीवन की पाथेयभूता यह संस्कृत भाषा ही है।

आधुनिक वैश्वीकरण के युग में भी प्रोफेसर कार्डोना ने संस्कृत को Magical भाषा कहा है और इसके अध्ययन को आनन्द। मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में संस्कृत की उपयुक्तता वर्णित है :-

निकला जहाँ से आधुनिक यह भिन्न भाषा तत्व है,
रखती न भाषा एक भी संस्कृत समान महत्त्व है।
पाणिनि सदृश वैय्याकरण संसार भर में कौन है?
इस प्रश्न का सर्वत्र उत्तर उत्तरोत्तर मौन है।।

विश्व संस्कृति के समग्र अध्ययन हेतु संस्कृत को उपेक्षित नहीं किया जा सकता। इसमें हमारे जीवन दर्शन और चिन्तन के अक्षय स्रोत सुरक्षित हैं। यह विश्व की संजीविनी शक्ति है। सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः जैसी उदार परिकल्पना इसी का अवदान है।

वैश्वीकरण ने यन्त्र, संचार तथा अस्त्र-शस्त्रों के उत्पादन में विकास की ऊँचाइयों को छू लिया है परन्तु संस्कृति के क्षेत्र में हम पिछड़ गये हैं। शान्ति स्थापना में यू. एन. ओ. के प्रयास पर्याप्त सफल रहे हैं, परन्तु हम युद्ध और आतंक को समाप्त नहीं कर पाये। संचार व्यवस्था ने विश्व को एक छोटी इकाई में परिवर्तित कर, मानव को एक दूसरे के बहुत समीप कर दिया है। जल, स्थल और अन्तरिक्ष की दूरियाँ समाप्त प्राय हैं। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' को एक नया अर्थ प्रदान किया जा रहा है। वैश्वीकरण के इस दौर में पूरा विश्व एक परिवार है। केवल वाह्य परिप्रेक्ष्य में मानवीय मूल्यों और संवेदनाओं की दृष्टि से नहीं। आज की स्थिति में यह वसुधा मात्र कुटुम्ब है जहाँ सामीप्य तो है सान्निध्य नहीं। सम्मिलन तो है, संवेदन नहीं। इस वैश्वीकरण का मानव सुखी परिवार की नींव, संविभाग, सान्निध्य, कुशल माङ्गल्य आदि से अनभिज्ञ है। उसे इन सब गुणों के पुनः परिभाषण की आवश्यकता है जिसमें संस्कृत की विशिष्ट भूमिका है।

संस्कृत साहित्य में प्रतिपादित उसका विश्वबन्धुत्व कहीं खो गया है। भौतिकता ने उसे ग्रस लिया है और स्वार्थ परायणता का दंश उसे डस गया है। उसे उपनिषदों के 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा' तथा 'मा गृधः कस्यस्विद् धनम्' के ऐक्यबोध की आवश्यकता है। संस्कृत एकता और समग्रता के स्वर भरती है सम्पूर्ण सांस्कृतिक जीवन की केन्द्र बिन्दु है। वर्तमान वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में संस्कृत साहित्य गति कराने वाला ऐसा मार्ग है जहाँ न कोई भटकन है और न कोई उलझन। इसका बहुक्षेत्रीय ज्ञान मानव जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करने में सक्षम है। इसके कल्याण सम्पादक गुण 'बहुजनसुखाय' 'बहुजनहिताय' विश्वहित साधक है। ''संस्कृत साहित्य वह उच्च गिरिशृंङ्ग है जिस पर चढ़कर मनुष्य काल के सुदीर्घ स्रोत को बड़ी दूर तक देख सकता है।

आधुनिक वैश्वीकरण में पनपते, कलह-क्लेश, वैमनस्य और अशान्ति से व्याकुल मानव को शुभ संकल्प और सत्कर्म की आवश्यकता है। 'तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु का स्वरघोष ही उसे स्वस्थ परिवेश में सांस लेने योग्य बना सकता है। आधुनिक विज्ञान की प्रगति विध्वंसक न हो, इसीलिए उपनिषत्स्वरलहरी 'असतो मा सद्गमय', 'तमसो मा ज्योतिर्गमय', आज भी सामाजिकों का पथ प्रशस्त करती है। आज विपरीत आचरण करने से जड़ीभूत मन में संवेदनशीलता का प्रादुर्भाव करने वाले मूलमन्त्र 'मातृदेवौ भव', 'पितृदेवोभव' धर्मं चर, सत्यं वद आदि संस्कृति के भव्यरूप को संचारित करने में सर्वथा समर्थ हैं। वस्तुतः जगत हमारी चेतना का एक प्रक्षेपण ही तो है। वैदिक सिद्धान्तों की छत्रछाया में जिस अनुपात में हम अपने को सुधारेंगे, संसार उसी अनुपात में अधिकाधिक अच्छा बनता चला जायेगा। आवश्यकता चेतना की है, आवश्यकता एकता की है, आवश्यकता समन्वय की है। हमें कुछ तो बदलना होगा, अकेली गूंज से हटकर सहगान बनाना होगा, अन्धेरे से हटकर सूरज बन चमकना होगा, अवरोधों को खण्डित कर शीतल ब्यार बन बहना होगा। दुश्चरित से बचने और सच्चरित में संलग्न होने की वैदिक प्रार्थनायें 'विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव, यद् भद्रं तन्न आ सुव' 'मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे' आज के वैश्वीकरण की अनिवार्यता है और यह संस्कृत साहित्य में ही निहित है।

भौतिकता की होड़ में हांफता मानव आज विश्वास, ईमानदारी, परिश्रम और सच्चाई से उठ सा गया है। अनैतिक साधनों से अपने उद्देश्य की पूर्ति उसकी आदत बन गई है। वैश्वीकरण के इस दौर में आदमी इन्सान बन जाये तो बहुत बड़ी बात है। एक शायर के शब्द याद आ रहे हैं :

क्या नजर लग गई जमाने को
कि अब कोई आँख नम नहीं होती।
टोकते सब हैं लड़खड़ाने को
कोई बैसाखियाँ नहीं बनता।।

पतन की ओर धंसते परिवेश में यह अनिवार्य हो गया है कि आज के पाठ्यक्रमों में संस्कृति की मूलभित्ति संस्कृत को अनिवार्य बनाया जाये। भर्तृहरि के नीतिवचन, वेदों की उदारता, सहकर्मिता, सहचिन्तन, उपनिषदों का संतुलन और गीता की स्थिरप्रज्ञता शिक्षण के अनिवार्य अंग होने चाहिए। व्यक्तिगत स्तर पर सांस्कृतिक मूल्यों के आधान से पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर एक स्वस्थ परिवेश बन पायेगा। एक नई दिशा मिलेगी। आत्मविश्वास, आत्मसम्मान और आत्मशक्ति प्राप्त होगी। अपनी सांस्कृतिक धरोहर को बनाये रखने में यह अनिवार्य है कि आज की सन्तान को संस्कृत से परिचित कराया जाये। संस्कृत जीवन विधि भी है और जीवन निधि भी। टी. वी. में दिखाये जाने वाले अधिकांश सीरियल संस्कृति को पछाड़ रहे हैं। 'राहुल दुल्हनिया ले जायेगा' सीरियल की लाखों के वस्त्राभूषणों से सजी दुल्हनें तो यह भी नहीं जानती कि रामायण और महाभारत के रचनाकार कौन हैं? कोई परशुराम कहती है तो कोई हनुमान। हिन्दू विवाह संस्कार के विविध कृत्य पाणिग्रहण, लाजाहोम, सप्तपदी आदि के वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक आधार को वे क्या जानेंगी?

आज विवाह विधि को छोड़ रहा है और आडम्बरों का शिकार होता जा रहा है। सप्तपदी के अतिशय महत्त्व का परिचायक सप्तपदीनं सख्यम् एक व्यापक लोक व्यवहार है। सख्य में सर्वदा समानता का भाव रहता है। इसमें गौरव का भी भाव रहता है 'Forget and forgive' का भाव समरसता बनाये रखता है। पत्नी के प्रति इस प्रकार के उदात्तभाव संस्कृत की ही देन हैं। अधिकार और स्वतंत्रता के आधुनिक संघर्ष ने इस सख्यभाव को नष्ट प्राय सा कर दिया है। एकात्मकता के अभाव में दाम्पत्य क्षीण होकर सामाजिक समझौता मात्र रह गया है। वैदिक वैवाहिक मंत्रों से विदित होता है कि गार्हपत्य का यथावत् पालन अभ्युदय और निःश्रेयस का साधक माना जाता था। यह दाम्पत्य सम्बन्ध केवल शारीरिक भोगवादी सम्बन्ध नहीं अपितु वैचारिक और हार्दिक सम्बन्ध भी है जिससे सुगठित परिवार के माध्यम से सौहार्द्रपूर्ण समाज का निर्माण होता है।

आदर्शमय जीवन था तब पति पत्नी का
धन्य जिससे वेद का युग हो गया।
गृहस्थ का वो दिव्यतम कर्त्तव्य पथ
प्रेम और विश्वास में ही खो गया।।

इसी प्रेम, विश्वास और एकता में दम्पत्ती पुत्र-पुत्रियों, नाती-पोतों से खेलते हुए अपने ही घर संसार में आनन्दित होकर सारी आयु बिता देने की कामना करते हैं। सुमङ्गली, कल्याणदायिनी वधू को आशीर्वाद दिया जाता था कि पति के घर जाकर गृहस्वामिनी, बनकर दीर्घायु भोगे। वधू पति की सहधर्मिणी और जीवन-संगिनी के पद पर सुशोभित थी। सबको अपने स्नेह से अभिसिंचित करती सभी का स्नेहभाजन बन उनके हृदयों में सम्राज्ञी बन विराजती थी। परिवार के संयुक्त जीने की पद्धति में स्नेह था, त्याग था और पवित्रता का विशुद्ध वातावरण था, जो आज कहीं देखने को नहीं मिलता। आज की अस्त-व्यस्त और मस्त जीवन पद्धति में विवाह का यह शुद्ध-बुद्ध स्वरूप कहीं खो गया है। वैश्वीकरण के इस परिवेश में क्ष्छ्ङ. कंनइसम प्ढबवउम छव ड्डपके नामक नई धारणा पनप रही है। अनेकत्व में एकत्व, समग्र जीवन का सानुपातिक विकास, व्यक्ति एवं समष्टि का सामंजस्य, अध्यात्मोन्मुखी जीवनदृष्टि आदि विशेषताएं समाज कल्याण की कसौटी रही हैं। इन उन्नायक तत्वों के अभाव में आज के समाज की नींव चरमरा गई है। आज की नारी जिस स्थिति के लिए प्रयत्नशील है उसकी परिपूर्ण कल्पना संस्कृत साहित्य में उपलब्ध है। वेदों की नारी सभी कार्य करने में समर्थ समाज के हर क्षेत्र में स्थान बनाने वाली एक विश्वस्त और आश्वस्त नारी है।

मातृभूमि व राष्ट्रभावना के सन्दर्भ में भी संस्कृत की उपयुक्तता प्रमाणित है। राष्ट्रैक्य और राष्ट्र सुरक्षा एक सामाजिक कर्त्तव्य हुआ करता था जहाँ वर-वधू को अपने राष्ट्र की समृद्धि करते हुए ही अपनी समृद्धि करते रहने का आशीर्वाद दिया जाता था। राष्ट्रीय भावना, राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय समृद्धि का निर्मल भाव आज के वैश्वीकरण की आवश्यकता है। मन, चित्त और संकल्पों में समानता होने और तदर्थ प्रयत्न करने के उपदेश के साथ-साथ सभा-समितियों में भी सुसंवाद, परस्पर सुसंगति, समानता बनाये रखना, मिलकर चलना, मिलकर बोलना, सौमनस्य बनाये रखने का स्वर गुंजन सामाजिक कल्याण के सुर भरता है।

पहले पंजाब, सिन्ध, गुजरात, मराठा, द्रविड़, उत्कल, बंग में बंटे भारत को पनुः मेघालय, नागालैण्ड, छत्तीसगढ़, उत्तराखण्ड में बंटते हुए देश के लिए समग्र राष्ट्र को अपने घर के समान समझने, सुविधा और अभ्यासानुसार भाषा प्रयोग की स्वतंत्रता देने वाले उस वैदिक चिन्तन की आवश्यकता है जहाँ सब के संगठित होने तथा आपस में कोई द्वेषभाव न रखने की प्रार्थनाएँ नित्य-प्रति की सपर्या हुआ करती थीं। कामना करती हूँ कि इस वैश्वीकरण में राष्ट्रीयधर्म हमारे नेताओं को

शेष पृष्ठ 7 पर

महर्षि दयानन्द और सर्व–धर्म सद्भाव

– श्री विश्वनाथ शास्त्री

भारतीय इतिहास में यह पहला अवसर था जब महर्षि दयानन्द ने अपने व्याख्यानों, शास्त्रार्थों और ग्रन्थों के द्वारा विदेशी धर्मो का खण्डन किया। भारतीय सम्प्रदाय और धर्म तो एक दूसरे का खण्डन करते ही रहते थे। 'शाक्त, 'शैव, वैष्णव सम्प्रदाय परस्पर एक दूसरे का खण्डन करते रहे हैं। आद्य शंकराचार्य ने जैनों और बौद्धों के साथ शास्त्रार्थ किया और उनके धर्मो का खण्डन करके उनको परास्त कर वैदिक धर्म की स्थापना की। उनके प्रचार और शास्त्रार्थो से बौद्ध धर्म तो भारत में समाप्तप्राय हो गया। किन्तु मतखण्डन पूर्वक स्वमत स्थापना की परम्परा तो भारत में आदि काल से चली आ रही है।

महर्षि दयानन्द ने अपने प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में भारतीय धर्मो और विदेशी धर्मो का एक समान विधिवत् खण्डन किया है। इससे भारतीय धर्मो और विदेशी धर्मो के दुराग्रही अन्धविश्वासी लोगों में कुछ तनाव की भावना आई। इससे कुछ लोगों में यह धारणा बन गई कि महर्षि दयानन्द ने खण्डन के मार्ग पर चलकर दूसरे धर्मावलम्बियों के प्रति सद्भाव को छोड़ वैमनस्य का मार्ग अपनाया है। इससे भारत के विविध धर्मो के अनुयायियों के बीच तनाव बढ़ा है। अब हम कुछेक पंक्तियों में इस बात को स्पष्ट करने का प्रयत्न करेंगे कि क्या महर्षि दयानन्द ने खण्डन का मार्ग अपना कर तनाव उत्पन्न किया है अथवा धर्म के इतिहास में एक नई जागृति उत्पन्न की है और प्रत्येक धर्म को वैज्ञानिक आधार पर खड़ा करने का यत्न किया है, सभी धर्मो को एक मंच पर लाने का प्रयास किया है?

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश की रचना बड़े शुद्ध भाव और सत्यान्वेषण की दृष्टि से की है। वे सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में लिखते हैं– ''यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान् प्रत्येक मत में हैं वे पक्षपात छोड़कर सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो–जो बातें सबके अनुकूल सबके मत में है उनका ग्रहण और जो एक दूसरे से विरूद्ध बातें हैं उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से वर्तें वर्तावें तो जगत् का पूर्ण हित होवे क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़ कर अनेकविध दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है। इन हानि ने जो कि स्वार्थी मनुष्यों को प्रिय है– सब मनुष्यों को दुख सागर में डुबा दिया है।'' महर्षि पुनः लिखते हैं– 'यद्यपि मैं आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुआ और बसता हूँ तथापि जैसे इस देश के मतमतान्तारों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता हूँ वैसे ही दूसरे देशस्थ या मतोन्नति वालों के साथ भी बर्तता हूँ। जैसा स्वदेश वालों के साथ मनुष्योन्नति के विषय में बर्तता हूँ वैसा विदेशियों के साथ भी तथा सब सज्जनों को बर्तना योग्य है।

महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश की उत्तरार्द्ध अनुभूमिका में एक सार्वभौम मत को प्रवर्तन करने के लिए लिखते हैं– जब तक इस मनुष्य जाति में मिथ्या मतमतान्तर का विरूद्ध वाद न छूटेगा तब तक अन्योऽन्य को आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य और विद्वज्जन ईर्ष्या–द्वेष छोड़ सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना चाहें तो हमारे लिए यह बात असाध्य नहीं है। यह निश्चय है कि इन विद्वानों के विरोध ने ही सबको विरोध जाल में फंसा रखा है। यदि ये लोग अपने प्रयोजन में न फंसकर सबके प्रयोजन को सिद्ध करना चाहें तो अभी ऐक्य मत हो जाय।

शास्त्रार्थ परम्परा और सत्यान्वेषण का समर्थन करते हुए महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश की अनुभूमिका–२ में बारहवाँ समुल्लास आरम्भ करने से पहले लिखते हैं जब तक वादी–प्रतिवादी होकर प्रीति से वाद या लेख न किया जाय तब तक सत्यासत्य का निर्णय नहीं हो सकता। जब विद्वान लोगों में सत्यासत्य का निश्चय नहीं होता तभी विद्वानों को महा अन्धकार में पड़कर बहुत दुख उठाना पड़ता है। इसलिए सत्य के जय और असत्य के क्षय के अर्थ मित्रता से वाद वा लेख करना हमारी मनुष्य जाति का मुख्य काम है।

सत्यार्थप्रकाश के उद्धरणों से हमने यह सिद्ध करने का यत्न किया है कि सत्यासत्य के निर्णय के लिए प्रीति से शास्त्रार्थ परम्परा को चलाना परम आवश्यक है और इसी दृष्टि से महर्षि ने अपने समय में प्रचलित सभी मतमतान्तरों की समीक्षा की है। अब हम महर्षि की जीवनी की ओर आते हैं और यह देखने का यत्न करते हैं कि उनका विविध धर्मो के अनुयायिओं के प्रति कैसा व्यवहार था। महर्षि संन्यासी होने के नाते **'सर्वभूतहिते रतः'** (सब प्राणियों का कल्याण करने वाले थे) वे 'शठे शाठ्यं समाचरेत्' –दुष्ट के प्रति दुष्टता का व्यवहार–सिद्धान्त को मानने वाले नहीं थे। वे तो दुष्टों के प्रति भी सज्जनता का व्यवहार करते थे। वे कहा करते थे– यदि दुष्ट अपनी दुष्टता को नहीं छोड़ते तो सज्जन अपनी सज्जनता को क्यों छोड़े? किसी कवि ने सज्जन का बड़ा सुन्दर लक्षण किया हैः–

ते साधवः सुजन्मानस्तैरियं भूषिता धरा।
अपकारिषु भूतेषु ये भवन्त्युपकारिणः।।

उन सज्जनों का जन्म लेना सार्थक है और ऐसे सज्जनों से धरती शोभायमान होती है– जो दुष्टों का भी उपकार करते हैं।

सच पूछिए तो महर्षि ऐसे ही सज्जन थे।

महर्षि दयानन्द ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' के सिद्धान्त को मानने वाले थे। वे समस्त संसार को अपना परिवार समझते थे। उनके लिए अपने–पराये नाम की कोई बात नहीं थी। वे सब धर्मो में एकता लाना चाहते थे। उन्होंने सभी धर्मो के आचार्यो को एक मंच पर लाने का यत्न किया। उनकी जीवनी का एक प्रसंग यह हैः– दिसम्बर १८७६ में दिल्ली में राजदरबार हो रहा था। वहां महारानी विक्टोरिया के महोत्सव के उपलक्ष में एक बड़ी राजसभा होने वाली थी। उसके लिए सभी राजे–महाराजे और प्रतिष्ठित नागरिक राज–निमंत्रण से वहाँ एकत्र हो रहे थे। कहा जाता है कि महाराजा इन्दौर ने ऐसे अवसर पर धर्म–प्रचार करने के लिए महर्षि को निमन्त्रित किया था। वे राजमण्डल में भी उनका भाषण कराना चाहते थे। राजदरबार के अवसर पर महर्षि के सत्संग का लाभ उच्चकोटि के लोगों ने उठाया। महर्षि तो चाहते थे कि राजाओं, महाराजाओं की सभा करके सब आर्यो में एक धर्म और एकता का तागा पिरो दिया जाय परन्तु अनेक कारणों से इसमें सफलता नहीं मिली। भारतीय राजाओं से आशा को सफल न होते देख एक दिन महर्षि ने अपने स्थान पर भारत के भिन्न–भिन्न मतों और जातीय नेताओं की एक सभा बुलाई। उनके निमंत्रण पर पंजाब के प्रसिद्ध सुधारक कन्हैयालाल जी अलखधारी, श्रीयुत् नवीनचन्द्रराय, श्री हरिशचन्द्र चिन्तामणि, सर सैय्यद अहमद खां, श्री केशवचन्द्र सेन और श्री इन्द्रमन जी– ये छह सज्जन वहाँ पधारे। वहाँ महर्षि ने यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया कि हम भारतवासी सब परस्पर एक मत होकर एक ही रीति से देश का सुधार करें तो आशा है भारत देश सुधर जावेगा, किन्तु कई मौलिक मतभेद होने के कारण वे सब एकता के सूत्र में सम्बद्ध न हो सके।

महर्षि दयानन्द को अपने सिद्धान्त प्यारे थे परन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि वे अन्यों के सिद्धान्त की अवहेलना करते थे। वे बड़े सहनशील थे। वे पौराणिक या हिन्दू धर्म के मूर्ति–पूजा आदि सिद्धान्तों की शास्त्रीय दृष्टि से समीक्षा करते हुए भी हृदय को विशालता के कारण हिन्दू धर्म को उदार ही मानते थे। अपने जीवन के एक प्रसंग में वे १८७७ के लगभग अमृतसर पहुंचे। वहां के कमिश्नर की प्रार्थना पर महर्षि उनके बंगले पर पधारे। वार्तालाप करते हुए कमिश्नर ने कहा कि– ''हिन्दू धर्म को'' 'सूत के समान कच्चा' क्यों कहते हैं?'' महर्षि ने उत्तर दिया– ''यह कच्चा नहीं किन्तु लोहे से भी कड़ा है। हिन्दू धर्म समुद्र के समान है। इसमें अनेक अच्छे और बुरे मतों के तरंग विद्यमान हैं। इस धर्म में ऐसे भी लोग हैं जो अत्यन्त दयावान् हैं, सदाचारी हैं, परोपकार परायण रहते हैं और एक निराकार परमेश्वर को अपने मनो मन्दिर में पूजते हैं। इनके विपरीत वे लोग भी हिन्दू धर्म में पाए जाते हैं जो महाक्रूर, अनाचारी, वामी हैं; कोरे नास्तिक, अवतारों को मानने वाले हैं। यहाँ योगी, ध्यानी, तपस्वी और आजीवन ब्रह्मचारी रहने वाले भी विद्यमान हैं और ऐसे भी अनेक हैं– जिनका उद्देश्य आमोद–प्रमोद और संसार का सुख है। हिन्दू धर्म में जहाँ छूआ–छूत मानने वाले सैकड़ों हैं वहाँ सबके साथ भोजन करने वाले हजारों हैं। परमार्थ–दर्शी और तत्वज्ञानी लोग इस धर्म में उच्च पद के पाए जाते हैं और ऐसे भी मिल जाते हैं जो ज्ञान के पीछे डण्डा लिए डोलते हैं। उत्तम मध्यम और निकृष्ट विचारों–आचारों के सभी मत और उनके मानने वाले मनुष्य इस मार्ग में मिलते हैं। वे सभी हिन्दू हैं और उन्हें कोई हिन्दूपन से निकाल नहीं सकता इसीलिए हिन्दू धर्म निर्बल नहीं किन्तु परम सबल है।''

प्रायः सभी धर्म अपने मत को सर्वश्रेष्ठ और अन्यों को दीन समझते हैं। इस प्रवृत्ति के कारण वे अपने धर्म के विरुद्ध किसी बात को सुनना नहीं चाहते। इसी प्रवृत्ति के कारण भारत में प्रचलित सभी धर्म महर्षि के खण्डन से उनके विरोधी बन गए परन्तु महर्षि ने तो खण्डन का मार्ग सत्यासत्य के निर्णय के लिए अपनाया था। वे किसी के दिल को दुखाना नहीं चाहते थे। वे सैद्धान्तिक दृष्टि से सभी धर्मो का खण्डन करते थे, किन्तु सभी धर्मो के अनुयायियों से प्रेम करते थे, विरोधियों का भी हित किया करते थे। अपने हत्यारों को भी क्षमा कर देते थे और उनके कल्याण के लिए यत्न'शील रहते थे। महर्षि के जीवन से संबन्धित एक और घटना –लगभग १८६७ में वे अनूपशहर में प्रचारार्थ पहुंचे। वहां एक ब्राह्मण ने रुष्ट होकर उन्हें पान में विष दे दिया। महर्षि ने न्यौली कर्म करके विष को अपने शरीर से निकाल दिया। सैय्यद मुहम्मद तहसीलदार, जो महर्षि के भक्त थे, ने जब यह समाचार सुना तो ब्राह्मण को कैद कर लिया। तहसीलदार का विचार था कि मेरे इस कर्म से महर्षि प्रसन्न होंगे, किन्तु जब उसने महर्षि से यह बात बताई तो महर्षि अप्रसन्न हो गये और उन्होंने कहा कि– ''मैं दुनिया को कैद कराने नहीं बल्कि उसे कैद से छुड़ाने आया हूँ। वह यदि अपनी दुष्टता को नहीं छोड़ता तो हम अपनी श्रेष्ठता क्यों छोड़ें?

महर्षि का ईसाइयों के प्रति कैसा सदभाव था? ईसाइयों के गिरजाघरों के प्रति उनकी कैसी भावना थी? यह जानने के लिए एक घटना का उल्लेख करते हैं जो महर्षि के जीवन से संबन्धित हैं–१८७६ के लगभग महर्षि बरेली पहुंचे। वहां उनके व्याख्यान होते थे। महर्षि का पादरी स्कॉट के साथ स्नेह सम्बन्ध था। वे नहीं आये तो महर्षि ने व्याख्यान के बाद पूछा कि भक्त स्कॉट क्यों नहीं आये? पता चला कि वे रविवार को गिरजाघर जाते हैं। महर्षि ने कहा कि चलो आज भक्त स्कॉट का गिरजाघर देख आएँ। महर्षि तीन चार सौ मनुष्यों के साथ गिरिजा में पहुंचे। महर्षि को आते देख पादरी स्कॉट वेदी पर से नीचे उतरकर आए और महर्षि को उपदेश देने के लिए प्रार्थना की। महर्षि ने उनके आग्रह पर वहाँ उपदेश दिया।

महर्षि का मुसलमानों के प्रति भी बड़ा स्नेहपूर्ण व्यवहार था और अभिजात वर्ग के मुसलमान भी उनका आदर करते थे। १८७३ के आसपास की बात है– महर्षि अलीगढ़ पहुंचे। वहां मुस्लिम युनिवर्सिटी अलीगढ़ के संस्थापक और प्रसिद्ध मुस्लिम नेता सर सैय्यद अहमद खां महर्षि की सेवा में प्रायः नित्य आया करते थे। एक दिन सैय्यद साहिब कई प्रतिष्ठित मुसलमानों और अंग्रेजों सहित महर्षि की सेवा में उपस्थित हुए और अग्निहोत्र की उपयोगिता पर वार्तालाप होता रहा। १८७६ में दिल्ली में राजदरबार के अवसर पर महर्षि ने सर्वधर्म एकता का आयोजन किया। इस गोष्ठी में परस्पर सौहार्दपूर्ण वार्तालाप हुआ।

लगभग १८७७ में महर्षि लाहौर पधारे। उनको लाहौर बुलाने में अधिक हाथ ब्रह्म समाजियों का था। उन्होंने महर्षि के दो व्याख्यान अपने मन्दिर में कराए। प्रथम व्याख्यान 'वेद ईश्वरीय ज्ञान' विषय पर था और दूसरा 'पुनर्जन्म' पर। ये दोनों व्याख्यान ब्रह्म समाज के मन्तव्यों के विरुद्ध थे। इसलिए ब्रह्म समाजी उनका विरोध करने लगे। महर्षि पुराणों का भी खण्डन करते थे, इसलिए जिस उद्यान में महर्षि निवास करते थे उसके मालिक ने भी उनका विरोध किया। फलतः महर्षि के भक्त जन उन्हें डॉक्टर रहीम खां की कोठी में ले आए। यह कोठी भक्त छज्जू के चौबारे के पास थी। इस कोठी में महर्षि व्याख्यान देते और दूसरे दिन शंका समाधान करते थे। इसी कोठी में निवास करते हुए महर्षि ने आर्य समाज के संशोधित दस नियम बनाये तथा आर्य समाज लाहौर की स्थापना हुई जिसका पहला सत्संग भी यहीं हुआ। धन्य हैं महर्षि! और धन्य हैं डॉ० रहीम खां जिन्होंने सर्वधर्म सद्भाव का एक अनूठा उदाहरण हमारे सामने रखा।

महर्षि जब जोधपुर में प्रचारार्थ पधारे थे तो वे राजस्थान के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री बरकत उल्ला खां के दादा की कोठी में निवास करते थे। श्री बरकत उल्ला खां ने सर्वधर्म सद्भाव के नाते उस कोठी को राष्ट्रीय स्मारक के रूप में दान कर दिया। ऐसे ही विरले अभिजात्य सज्जनों के सौजन्य से सर्वधर्म एकता की आदर्श भावना परम्परा से चली आ रही है।

महर्षि ने सर्वधर्म सद्भाव का अभियान चलाया था और आर्य समाज इस अभियान को अब तक चलाता आ रहा है। इतना ही नहीं मुस्लिम वर्ग भी आर्य समाज के इस सौहार्दपूर्ण अभियान का आदर करते हैं। आर्य समाज स्थापना शताब्दी दिल्ली १९७५ तथा महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर १९८३ के अवसर पर मुसलमानों ने शोभा यात्राओं के समय अपनी भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की थी। प्रभु इस परम्परा को दोनों ओर से बनाए रखे।

आर्य समाज बरनाला, जिला–गुरदासपुर (पंजाब) द्वारा प्रकाशित, वर्ष–2026 के कैलेंडर का भव्य लोकार्पण
सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा स्वामी आदित्यवेश जी के कर–कमलों द्वारा किया गया

आर्य समाज ग्राम बरनाला जिला–गुरदासपुर, पंजाब के प्रमुख पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं की एक विशेष बैठक मास्टर गुरदित सिंह जी की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस अवसर पर पंजाब प्रवास के दौरान सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान पूज्य स्वामी आर्यवेश जी एवं स्वामी आदित्यवेश जी विशेष रूप से कार्यक्रम में सम्मिलित हुए तथा वर्ष–2026 के कैलेंडर का लोकार्पण किया।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने संगठन के प्रचार–प्रसार हेतु नवयुवकों के शारीरिक एवं आत्मिक उत्थान के लिए शिविर आयोजित करने की प्रेरणा दी तथा अधिक से अधिक लोकसेवा कार्य करने का आह्वान किया।

बैठक में मंत्री श्री तरसेम लाल आर्य ने आर्य समाज ग्राम बरनाला की गतिविधियों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने विशेष रूप से हाल ही में आई बाढ़ से प्रभावित लोगों के लिए किए गए सेवा कार्यों जैसे राशन, कंबल, रजाइयाँ, तकिए एवं औषधियों के वितरण का विवरण प्रस्तुत किया।

बैठक में श्री धर्मेन्द्र शास्त्री, श्री जतिंदर त्रेहन, प्रेस सचिव श्री सुशील बरनाला, श्री अमरीक सिंह, श्री गुरदियाल सिंह, श्री गुरचरण सिंह, श्री विजय चांडल, श्री हितेश शास्त्री, श्री कमल कुमार, श्री प्रेम चंद, श्री मोहन लाल, श्री पलविंदर कुमार, श्रीमती राज कुमारी, श्रीमती सोनिया गुलशन, रजी देवी, गीता रानी सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

99वें बलिदान दिवस पर स्वामी श्रद्धानन्द को दी गई श्रद्धांजलि
स्वामी श्रद्धानन्द के आदर्शों पर चलने का संकल्प लें – मनोज तिवारी 'सांसद'
स्वामी श्रद्धानन्द ने घर वापसी का मार्ग प्रशस्त किया – अनिल आर्य

नई दिल्ली, बुधवार, 24 दिसम्बर 2025, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी, महान समाज सुधारक एवं गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती का 99वाँ बलिदान दिवस 24, मदर टेरेसा क्रिसेंट रोड, नई दिल्ली में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। आचार्य गवेंद्र शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ।

मुख्य यजमान एवं मुख्य अतिथि सांसद श्री मनोज तिवारी एवं श्रीमती सुरभि तिवारी रहे। उनके साथ उनकी प्रिय बेटियाँ सान्विका एवं मनोज्ञा भी उपस्थित रहीं।

संसद सदस्य श्री मनोज तिवारी ने कहा कि आज हम स्वामी श्रद्धानन्द जी का 99वाँ बलिदान दिवस अपने आवास पर मना रहे हैं, जिसे मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ। स्वामी श्रद्धानन्द हिन्दू समाज और सत्य सनातन के लिए बलिदान हो गए। वे आने वाली चुनौतियों को पहचानते थे, इसलिए उन्होंने समाज को संगठित किया। निश्चित रूप से आज आर्य समाज जो आगे बढ़ रहा है, उसमें स्वामी श्रद्धानन्द जी का बहुत बड़ा योगदान है।

समारोह अध्यक्ष एवं शिक्षाविद् अंजू मेहरोत्रा ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द ने दलितोद्धार का सराहनीय कार्य किया और ऊँच–नीच की दीवार को मिटाने में अहम भूमिका निभाई। उनके समाजोत्थान के योगदान को सदैव स्मरण रखा जाएगा।

समारोह के संयोजक एवं केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने धर्मान्तरित हिन्दुओं का पुनः शुद्धिकरण कर हिन्दू समाज में घर वापसी का मार्ग प्रशस्त किया और इसी शुद्धि कार्य के लिए वे बलिदान हो गए। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा के लिए जालंधर में कन्या महाविद्यालय की स्थापना की। वे सर्वदानी थे। गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना के लिए उन्होंने अपनी कोठी और प्रेस बेचकर अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया।

आचार्य गवेंद्र शास्त्री ने कहा कि स्वामी दयानन्द जी के प्रवचनों को सुनकर उनके जीवन में परिवर्तन आया और वे मुंशी राम से स्वामी श्रद्धानन्द बने। उन्होंने आर्य समाज को कुशल नेतृत्व प्रदान किया और अनेक गुरुकुलों की स्थापना की।

इस अवसर पर भाजपा नेता जोगी राम जैन, पार्षद यशपाल आर्य, ओम सपड़ा, डॉ. डी.के. गर्ग, जश्नने मोहाल आदि ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में गायिका प्रवीण आर्या पिंकी, रमेश बेदी, प्रवीण आर्य (गाजियाबाद) एवं सुन्दर शास्त्री आदि ने मधुर गीत प्रस्तुत किए। मुख्य रूप से महामंत्री श्री महेन्द्र भाई, देवेन्द्र भगत, श्री धर्मपाल आर्य, श्री प्रकाश वीर शास्त्री, श्री सुशील बाली, डॉ. प्रमोद सक्सेना, श्री सुभाष शर्मा, श्री यज्ञवीर चौहान, श्री देवेन्द्र गुप्ता, श्री सुरेश आर्य, श्री रमेश गाड़ी, श्री अमर सिंह सहरावत, श्री कंवरपाल शास्त्री, श्री रोहित कुमार आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज राजनगर, गाजियाबाद (उ0 प्र0) में पं. प्रकाशवीर शास्त्री जी की 102वीं जयन्ती समारोह पूर्वक मनाई गई

आर्य समाज भवन में पं. प्रकाशवीर शास्त्री जी के चित्र का अनावरण श्री के.सी. त्यागी ने किया

कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की

पं. प्रकाशवीर शास्त्री बहुआयामी विलक्षण प्रतिभा के धनी थे – स्वामी आर्यवेश

प्रख्यात विचारक एवं राष्ट्रवादी नेता पं. प्रकाशवीर शास्त्री जी की 102वीं जयंती आर्य समाज, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश के प्रांगण में धूमधाम के साथ मनाई गई। इस अवसर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, पूर्व सांसद एवं वरिष्ठ नेता (जद–यू) श्री के.सी. त्यागी जी, डॉ. सत्यवीर त्यागी जी (पं. प्रकाशवीर के छोटे भाई), डॉ. संजय त्यागी जी (स्व0 पं0 प्रकाशवीर शास्त्री के भांजे), श्री बालेश्वर त्यागी जी पूर्व शिक्षा मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार, श्री श्रद्धानन्द शर्मा संरक्षक आर्य समाज राजनगर आदि ने स्व0 पं0 प्रकाशवीर शास्त्री के संस्मरण प्रस्तुत किये। मंच का कुशल संचालन श्री सत्यवीर चौधरी प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा, गाजियाबाद ने किया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने पं. प्रकाशवीर जी के बाल्यकाल से लेकर उनके अन्तिम सांस तक की घटनाओं पर संक्षिप्त प्रकाश डाला जिसे सभी लोग दत्त चित्त होकर सुनते रहे। पण्डित जी का जन्म 30 दिसम्बर, 1923 में उस समय के मुरादाबाद (वर्तमान में अमरोहा) के रैहरा गांव हुआ था। उनकी शिक्षा गुरुकुल से प्रारम्भ हुई और आगे चलकर गुरुकुल ज्वालापुर से पढ़ाई करते हुए अनेक महाविद्यालयों से शिक्षा प्राप्त करके, अनेक संगठनों के माध्यम से कार्य करते रहे। आर्य समाज की ओर से चलाये जा रहे हिन्दी आन्दोलन तथा अनेक आन्दोलनों में पण्डित जी की सक्रिय भूमिका रही। उन्होंने पंजाब के अन्दर हिन्दी आन्दोलन में बहुत बड़ी भूमिका निभाई। उनके सामाजिक कार्य इतने बड़े पैमाने पर थे कि उन्होंने अपनी राजनीतिक यात्रा गुड़गांव से निर्दलीय सांसद के रूप में प्रारम्भ की और बाद में बिजनौर और हापुड़ से भी निर्दलीय ही सांसद बनें। पण्डित जी

के कृतित्व एवं व्यक्तित्व को मुझे भी देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनकी अन्त्येष्टि में निगम बोध घाट पर भी जाकर उन्हें अन्तिम बिदाई देने के लिए उपस्थित हुआ।

स्वामी जी ने बताया कि सांसद रहते हुए उन्होंने कई प्राइवेट बिल संसद में पेश किये। पण्डित जी ने जम्मू–कश्मीर के सम्बन्ध में भी उस समय अपने दूरदर्शी विचार प्रस्तुत किये थे। उन्होंने आज से कई वर्ष पूर्व जो बातें रखी थी और धारा–370 के विरुद्ध उन्होंने ही सर्वप्रथम आवाज उठाई थी। इस प्रकार उनका व्यक्तित्व बहुआयामी था उनका निधन रेल दुर्घटना में हुआ और वे अपने कार्यों की अमिट छाप छोड़कर विदा हो गये। नई पीढ़ी के नवयुवकों को उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए।

अपने विचार प्रस्तुत करते हुए श्री के0सी0 त्यागी ने पं0 प्रकाशवीर शास्त्री को महान् राष्ट्रवादी नेता बताया।

श्री बालेश्वर त्यागी ने अपने वक्तव्य में पं0 प्रकाशवीर शास्त्री को कुशल राजनेता एवं विचारक बताया।

पं0 श्रद्धानन्द शर्मा ने विस्तार से अपने संस्मरण सुनाते हुए कहा कि पं0 प्रकाशवीर शास्त्री अपने सहयोगियों एवं कार्यकर्ताओं के लिए सदैव तत्पर रहते थे। उनके हर कार्य में विशेष सहयाग करते थे। अत्यन्त मृदु भाषी एवं प्रतिभा के धनी थे, मेरा उनसे बहुत लम्बा सान्निध्य रहा और आर्य समाज के अनेक कार्यों में उनका हमें विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

डॉ. संजय त्यागी (स्व0 पं0 प्रकाशवीर शास्त्री के भांजे) ने अपनी श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि मुझे अपने मामा जी के साथ बहुत दिन तक रहने का सौभाग्य मिला। उन्होंने मुझे संध्या करना सिखाया और शिक्षा में ऊँचे पद तक जाने की प्रेरणा मुझे उनसे ही मिली। वे मुझसे अत्यधिक स्नेह करते थे। उनके देहावसान से राष्ट्र की और हमारे परिवार की अपूर्णीय क्षति हुई वे हमारे देश के गौरव थे।

आर्य समाज के भजनोपदेशक श्री नरेश मुनि वानप्रस्थी ने पं0 प्रकाशवीर शास्त्री जी के जीवन पर एक भजन के द्वारा विस्तार से प्रकाश डाला।

अन्त में जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा गाजियाबाद के पूर्व प्रधान श्री सेवाराम त्यागी ने सभी अतिथियों एवं आगन्तुक श्रोताओं का धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस अवसर पर जिला सभा के कोषाध्यक्ष श्री कृष्ण शास्त्री, आर्य केन्द्रीय सभा के मंत्री श्री नरेन्द्र पांचाल, श्री मोतीलाल गर्ग आदि ने व्यवस्था में विशेष सहयोग किया। विद्वानों का त्यागी सभा की ओर से शॉल भेंटकर स्वागत किया गया। शांति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हो गया।

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी का 99वाँ बलिदान दिवस भव्यतापूर्ण वातावरण में मनाया गया

स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती ने हिन्दू समाज के संगठन और राष्ट्रीय चेतना को दी नई दिशा – रामानन्द आर्य

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी आर्य समाज आरा के तत्वावधान में आर्य समाज के सभागार में स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती जी का 99वां बलिदान दिवस श्रद्धा, सम्मान और वैचारिक गरिमा के साथ मनाया गया। इस अवसर पर बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान श्री रामानन्द आर्य, श्री अरुण आर्य, श्री सिद्धेश्वर वर्मा, श्री सुखलाल प्रसाद, श्री महावीर विद्यालय विद्यासागर, श्री वेद आनन्द, श्री विद्याभूषण, श्री संजय, श्री अरुण, प्रो. हरि नारायण आर्य, डॉ. सुरेन्द्र प्रसाद, श्री आर. बी. सिंह, आचार्य ओम प्रकाश शास्त्री (प्रधान, आर्य समाज), श्री इंद्रमणि सिंह, श्री आशीष कुमार शर्मा, श्री धीरज कुमार, श्री गोविंद कुमार, श्री संजय वर्मा, श्री विनोद राज, श्री सच्चिदानंद, श्री ज्ञानेश्वर प्रसाद आर्य, श्री ओम प्रकाश, डॉ. उमेश प्रसाद, श्री नीरज कुमार (कोषाध्यक्ष), श्री प्रकाश रंजन सहित अन्य गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे तथा मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा जिलाध्यक्ष श्री दुर्गा राज जी विशेष रूप से उपस्थित हुए।

इस अवसर पर बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान श्री रामानन्द आर्य जी ने कहा कि 1920 के दशक में चले शुद्धि आंदोलन में स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती जी की भूमिका ऐतिहासिक रही, जिसके माध्यम से उन्होंने हिंदू समाज को संगठित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। साथ ही उन्होंने समाज के उपेक्षित, वंचित और तथाकथित अछूत वर्गों के उत्थान के लिए भी उल्लेखनीय प्रयास किए, जो आज भी प्रेरणास्रोत हैं। स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती का संपूर्ण जीवन समाज को एकसूत्र में पिरोने की साधना रहा। उनका उद्देश्य समाज को धर्म या जाति के नाम पर विभाजित करना नहीं, बल्कि समरसता और एकता का भाव जाग्रत करना था।

मुख्य वक्ता श्री दुगा राज जी ने कहा कि वेद सर्वोपरी और सनातन ग्रंथ हैं, जिनके आदर्शों के आधार पर भारत ने विश्वगुरु का गौरव प्राप्त किया। आर्य समाज सदैव वैदिक सनातन संस्कृति के रक्षार्थ कार्य करता है। स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी के राष्ट्र रक्षा सम्बन्धी कार्यों एवं गुरुकुल शिक्षा के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

कार्यक्रम में वक्ताओं ने स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती को स्मरण करते हुए बताया कि अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय सहित अनेक शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना कर शिक्षा को राष्ट्र निर्माण का सशक्त माध्यम बनाया।

कार्यक्रम के अन्त में आगन्तुक सभी अतिथियों एवं आर्यजनों का धन्यवाद ज्ञापन प्राकृतिक योग पीठ ट्रस्ट के संस्थापक स्वामी स्वामी विक्रमादित्य ने किया। कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

पृष्ठ 1 का शेष

झारखण्ड राज्य प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

व्यापकरूप से किया, जिसके परिणामस्वरूप आज देश की आधी आबादी स्वतन्त्ररूप से प्रत्येक क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। स्वामी जी ने आज वर्तमान की ज्वलन्त समस्याओं के समाधान के लिए महिलाओं को आगे आकर कार्य करने का आह्वान किया। स्वामी जी ने प्रान्तीय आय महासम्मेलन की सफलता पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा कि झारखण्ड में विशेष कार्य करने की आवश्यकता है। आज जिस प्रकार से झारखण्ड में बंगलादेशी घुसपैठ, धर्मान्तरण, डायन–बिसाही के नाम पर सामूहिक हत्याएँ हो रही हैं। इन समस्याओं के समाधान में आर्य समाज की भूमिका और भी बढ़ जाती है। प्रान्तीय सभा के प्रधान और वैदिक विद्वान आचार्य कौटिल्य को आश्वासन देते हुए स्वामी आयवेश जी ने कहा कि झारखण्ड में कार्य करने के लिए जिस किसी प्रकार से सहायता की आवश्यकता पड़ेगी सार्वदेशिक सभा और स्वामी आर्यवेश सदैव आपके साथ खड़े रहेंगे।

इस सम्मेलन में दूसरे दिन की सायंकालीन बेला में कवि सम्मेलन में अन्तर्राष्ट्रीय कवि डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी विशेष रूप से पधारे हुए थे। मनीषी जी जिस प्रकार से अपनी क्रान्तिकारी देशभक्ति की कवितामों को जब प्रस्तुत कर रहे थे उस समय लगभग दो हजार की संख्या में श्रोताओं की भुजाएं फड़क रही थीं, खून में उबाल था और रक्त के कण में मानों देशभकि की ज्वाला उठ रही हो।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन के समापन दिवस पर महायज्ञ की पूर्णाहुति में लगभग ढाई हजार की संख्या में आर्य परिवारों के एवं अन्य पौराणिक परिवारों के याज्ञिकों की आशीर्वाद प्रदान करते समय आचार्य कौटिल्य ने जिस प्रकार उत्साहवर्धन किया और प्रेरित किया उस समय आशीर्वाद प्राप्त करते हुए सैकड़ो परिवारों ने जीवन पर्यन्त यज्ञोपवीत धारण करने का संकल्प लिया, साथ ही साथ मांसभक्षण और मदिरा सेवन एवं अन्य नशीली मादक द्रव्यों का त्याग करने का संकल्प लिया। आचार्य कौटिल्य के प्रवचन से प्रभावित होकर वहाँ बैठे हुए स्थानीय विधायक श्री जनार्दन पासवान जी ने तो वहीं संकल्प लिया कि में सदा चोटी रखूँगा और यज्ञोपवीत धारण करूँगा।

शोभायात्रा – संभवतः झारखण्ड प्रदेश के इतिहास में तीसरे दिन के समापन दिवस पर निकाली गई शोभा यात्रा ऐतिहासिक थी। सबसे बड़ी बात यह थी कि पाँच किलोमीटर तक ध्वनि यन्त्र लगाये गये थे। इस शोभायात्रा में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, डा० सारस्वत मोहन मनीषी खुले वाहन में बैठकर कहीं–कहीं सम्बोधन करते हुए शोभा यात्रा का नेतृष्व कर रहे थे। प्रान्तीय सभा कोषाध्यक्ष और आज के के भामाशाह श्री जीवन गोप जी भी शोभायात्रा का नेतृत्व कर रहे थे। शोभा यात्रा में प्रमुख झांकियों में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान की झांकी, यज्ञ की झांकी, गुरु शिष्य पठन–पाठन की झांकी, पाखण्ड खण्डिनी पताका झांकी, अपनी–अपनी शिक्षा से संदेश दे रही थीं। इस शोभायात्रा में एक स्थानीय आर्य समाज के परिवारों के सदस्य, चतरा जिले के तीन आर्य समाज के परिवार, ग्यारह जिलों से आये हुए प्रतिनिधि एवं सदस्य, आर.एस.एस., बजरंगदल, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् – दुर्गावाहिनी, आर्य वीरदल, आर्य वीरांगना दल, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, केन्द्रीय आर्य युवती परिषद के सभी कार्यकर्तागण एवं अन्य सामाजिक संगठनों के कार्यकर्ता एवं राजनैतिक दलों में भाजपा के कार्यकर्ता, झारखण्ड मुक्ति मोर्चा, राजद एवं कांग्रेस के कार्यकर्ता सम्मिलित रहे।

लगभग 10 हजार की संख्या में शोभा यात्रा परिवर्तित हुई तो मानो ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे पूरा शहर ही चल पड़ा हो। अस्त्र–शस्त्र संचालन एवं प्रदर्शन कर रहीं सैकड़ों महिलाओं एवं युवतियों की रात्रि में सैकड़ों पुलिस सुरक्षा प्रदान कर रहे थे। शोभायात्रा को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि यह कार्यक्रम और शोभा यात्रा आर्यों का न होकर पूरे सनातनी भाई–बहनों का हो। विशेष बात यह रही कि इस पूरे कार्यक्रम को भाजपा, कांग्रेस, राजद, झामुमो के पदाधिकारी और कार्यकर्ता तन–मन–धन से सफल बनाने में लगे हुए थे। प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन के संयोजक और झारखण्ड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य कौटिल्य के द्वारा सुझाव दिये जाने पर सभा की ओर से और स्वामी आर्यवेश जी के करकमलों द्वारा लगभग 250 कार्यकर्ताओं को स्मृति चिन्ह, स्वामी दयानन्द जी का चित्र और सत्यार्थप्रकाश की पुस्तक भेंट स्वरूप दिया गया। शोभा यात्रा की सफलता का पूरा श्रेरू आर्ष कन्या गुरुकुल की प्राचार्या पुष्पा शास्त्री को जाता है।

इस पूरे कार्यक्रम में आर्ष कन्या गुरुकुल हजारीबाग की ब्रह्मचारिणियों द्वारा बहुत सारे जीवंत नाटक भी प्रस्तुत किए गए –जैसे झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, लव–कुश, आपरेशन सिंदूर, बिरसा मुंडा आदि। पुष्पा शास्त्री पिछले एक महीने से लगभग 300 महिलाओं एवं 200 युवतियों को शोभायात्रा के लिए अस्त्र–शस्त्र का प्रशिक्षण देती रहीं। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

शुभ सूचना ओ३म् शुभ सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

ऋषिवर दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित
अद्भुत और अनुपम कालजयी ग्रन्थ

1100/– रुपये में उपलब्ध है

सत्यार्थ प्रकाश
बड़े साईज में उपलब्ध

हिन्दी के एक बड़े सत्यार्थ प्रकाश के साथ छोटे साईज का अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश मुफ्त में उपलब्ध है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी द्वारा लिखित कालजयी ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' को आप अपने आर्य समाज, स्कूल, कॉलेज में रखें तथा इष्ट मित्रों एवं नव-दम्पत्तियों को भेंट करके पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

बड़े साईज का सत्यार्थ प्रकाश बढ़िया कागज तथा सुन्दर बाईंडिंग के साथ तैयार कराया गया है जिसे बिना चश्मे के भी पढ़ा जा सकता है।

हिन्दी के बड़े सत्यार्थ प्रकाश के साथ जो अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश दिया जा रहा है वह भी सुन्दर कागज तथा आकर्ष बाईंडिंग में तैयार कराया गया है

20X30 का चौथा साईज

उपरोक्त पुस्तक को मंगाने के लिए नीचे दिये गये दूरभाष नम्बर तथा ई–मेल आई.डी. पर बुक कराकर मंगा सकते हैं। डाक से मंगाने पर डाक व्यय का अतिरिक्त खर्च देना होगा।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

दूरभाष – 011–23274771, 011–42415359, मो.:–9868211979, 8218863689

ई-मेल : ***sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in***

पृष्ठ 2 का शेष

आधुनिक वैश्वीकरण में संस्कृत की उपयोगिता

सद्विचार प्रदान करें ताकि भाषा व जातिभेद से ऊपर उठकर सर्वत्र एकात्मभाव के स्वर गूंज पायें।

राष्ट्रीय वैश्वीकरण के इस युग में आज पुनः उसी मधुर चिन्तन की, परिवारों के उल्लास व सौहार्द की आदर और आदर्श मिश्रित स्नेहिल परिवेश की आवश्यकता है।

दहेज के लोभ में वधुओं को जलाने वाले तथा कन्या-भ्रूण हत्या करने वाले परिवारों को यह बोध अनिवार्य है कि हमारी वैदिक संस्कृति में नारी पुरुष की सहयोगिनी और सहभागिनी थी। वह सम्राज्ञी बन अपने अधिकार और कर्त्तव्यों को निष्ठा से निभाती, आत्मविकास के पथ पर अग्रसर हो नागरिकता के उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हुए सांस्कृतिक विकास द्वारा समाजसेवा में योगदान देती थी न कि कन्या-भ्रूण हत्या की पात्र बनती थी।

वैश्वीकरण के इस युग में यदि युवाओं को वैदिक जीवन पद्धति का बोध कराया जाये तो आज का सिसकता दाम्पत्य एक सुन्दर, सुवासित दाम्पत्यभाव का आनन्द ले सकेगा। कहीं कोई परिवार नहीं टूटेगा, कोई शिशु माँ-बाप से नहीं बिछुड़ेगा, कहीं कोई कन्या-भ्रूण हत्या न होगी और कहीं कोई युवती यौतुक दहन में नहीं झुलसेगी। पति-पत्नी समरस हो कर एक उज्ज्वल स्वस्थ परिवेश दे पायेंगे।

हमारा सांस्कृतिक न्यास संस्कृत भाषा में ही विन्यस्त है। हमारे समस्त धार्मिक व सांस्कृतिक कृत्य संस्कृत में ही सम्पन्न हैं। अतः संस्कृत से मन, वाणी और क्रिया को सुसंस्कृत करना होगा। आज वैश्वीकरण के युग में सभी अनुष्ठान औपचारिकता मात्र रह गये हैं। इनके प्रति शिथिलता और उदासीनता आज का फैशन है। बहुत बड़ी विडम्बना है कि आज का मानव इनकी वैज्ञानिकता से अनभिज्ञ है। इस स्थिति में संस्कृत की उपयुक्तता और भी बढ़ जाती है। हमारे विविध याज्ञिक आग्नेय अनुष्ठान केवल शरीर और मन को ही शुद्ध नहीं करते वे पर्यावरणीय शुद्धि में भी सहायक हैं। इन कृत्यों में किये जाने वाले मन्त्रोच्चारण से प्रसृत स्वर लहरियों से 'Ultra Sonic Waves Treatment' के समान रोगाणुओं को नष्ट करने की सामर्थ्य है। 'सह नाववतु सह नो भुनक्तु सह वीर्य करवावहे' का सहभागित्व ही आज के वैश्वीकरण की पुकार है।

वैश्वीकरण के सन्दर्भ में संस्कृति के नैतिक, सामाजिक, दार्शनिक तथा राष्ट्रीय प्रसंग में संस्कृत की उपयुक्तता पूरे विश्व में है। विश्वशान्ति के लिये 'वसुधैव कुटुम्बकम्' तथा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्', मानव व प्रकृति के सुन्दर, स्वस्थ पर्यावरण के लिए 'द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः', राष्ट्रैक्य के लिए 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी', 'अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी' आदि निर्देश महत्त्वपूर्ण हैं। संसदभवन में 'धर्मचक्र प्रवर्तनाय', डाकतार वाहनों पर 'अहर्निशं सेवामहे' जीवन बीमा निगम में 'योगक्षेमं वहाम्यहम्' शिक्षा संस्थानों में विद्ययाऽमृतमश्नुते ''निष्ठा धृतिः सत्यम् तमसो मा ज्योतिर्गमय' आदि सारगर्भित वाक्य आधुनिक वैश्वीकरण में संस्कृत की सर्वप्रचलित उपयुक्तता को ही प्रमाणित करते हैं।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि संस्कृत एकविषयात्मिक नहीं है। यह विविध विषयों की शृंखला है। यदि आज के पाठ्यक्रम में संस्कृत निबद्ध तत्-तत् अंश विभिन्न विषयों में निर्धारित कर दिये जायें तो भारत का ही नहीं, विश्व का प्रत्येक नागरिक अपने अतीत को अधिक समझ पायेगा, वर्तमान में विशेष सन्तुलित व्यवहार कर पायेगा और अपने भविष्य के प्रति उल्लसित होकर उचित आचरण कर पायेगा। वैश्वीकरण के सन्दर्भ में यह नितान्त अनिवार्य है कि संस्कृत की विषय शृंखला विविध विषयों से सुसम्बद्ध हो पाये। राजनीति में कौटिल्यशास्त्र की, कानून में मनुस्मृति की, आयुर्वेद में चरक व सुश्रुत संहिता की अनिवार्यता विषयों को तत्वतः जानने में सहायक भी होगी और उपयोगी भी। वाणिज्य व व्यावसायिक प्रबन्धन भी संस्कृत निष्ठा होने पर विशेष सुभग बन सकता है। चेतना, नैतिक मूल्याङ्कन, सदसंकल्प व परिश्रम आज के प्रबन्धन की कड़ियाँ हैं।

उपनिषदों में प्रतिपादित आत्मदर्शन (Introspection) आत्मश्रवण (अपने दोषों को सुनने की सामर्थ्य) और आत्मनिदिध्यासन (Self Analysis) वैश्वीकरण के इस युग में मानव को सद्-दृष्टि देने में सक्षम हैं। आज इसी आत्मदर्शन, आत्मश्रवण और आत्मनिदिध्यासन की आवश्यकता है।

आज की मानवता अलगाव और अकेलेपन की मर्मान्तक पीड़ा से सन्त्रस्त है। संस्कार प्रधान संस्कृति आज की अनिवार्यता है। विनय, आदर, वृद्धसेवा आज की पुकार है। सुसंस्कृत व्यवहार और आचरण जीवन को सार्थकता प्रदान करते हैं। यह तथ्य यदि आज की पीढ़ी समझ पाये तो व्सक ।हम ब्वउमे की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। आधुनिक सभ्यता से पीड़ित और उपेक्षित वृद्ध भी अपने-अपने परिवारों में सुखद जीवन बिता सकेंगे और 'पश्येम शरदः शतम्, जीवेम शरदः शतम्, अदीनाः स्याम् शरदः शतम्' को सार्थक कर पायेंगे।

वैश्वीकरण के युग में संस्कृत की उपयुक्तता इस तथ्य में भी निहित है कि संस्कृतनिष्ठ व्यक्ति किसी भी विकट स्थिति से सहजता से उभर सकता है। गीता की स्थितप्रज्ञता, उपनिषदों का आध्यात्मिक ज्ञान, वेदों का शुभसंकल्प उसे आश्वस्त कर उसकी राहों के दीपस्तम्भ बन उपस्थित होते हैं। सत्यं शिवं सुन्दरं की अजस्र धारा निरन्तर सिंचित करती उसे पल्लवित और विकसित करती हैं।

आशा करती हूँ कि वैश्वीकरण के इस दौर में संस्कृति के सकारात्मक चिन्तन की दीपशिखा निरन्तर जगमगाती रहे। दीप से दीप प्रज्ज्वलित होता रहे, लोक कल्याण की सुरभि चहुँदिक् महकती रहे। मेरा मानना है कि संस्कृत वह चिराग है जो हकीकत है - सच्चाई है। वह रोशनी है जो हमारी मायूसियों से मद्धम हुए चिरागों को रोशन करती है। वह जीवन तत्व है जो हमें भाव, विचार और अभिव्यक्ति का उचित अनुपात सिखाती है। जियो और जीने दो का पाठ पढ़ाती है हमें इस योग्य बना देती है कि हम किसी के फटे लिबास को टांक सकें, किसी के मन की आबरू बन सकें। संस्कृत वस्तुतः अमृत की बूँदें हैं। आब-ए-हयात के कुछ कतरे हैं। संस्कृत वह शाश्वत चिन्तन है जो अहसास कराता है हम कौन थे, हम क्या हैं और क्या होंगे अभी। आज के वैश्वीकरण परिवेश में संस्कृत मानो मानव को कह रही है :-

खुशबू हूँ मैं, फूल नहीं हूँ जो मुरझा जाऊँगी,
ममता का आंचल बन के तुम को लोरी सुनाऊँगी
मेरे गीत सहारा देंगे मीत बन कर सहलाऊँगी
अनदेखा तारा बन करके राह मैं तुम्हें दिखाऊँगी।

भोजन पचेगा या सड़ेगा?

हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि खाना पेट में जाने पर पेट में दो ही क्रियाएं होती हैं, एक क्रिया है जिसको हम कहते हैं पचना, और दूसरी है, सड़ना।

खाना पचेगा या सड़ेगा – खाना खाने के बाद पेट में खाना पचेगा या खाना सड़ेगा, यह जानना बहुत जरूरी होता है। हमने रोटी खाई, दाल खाई, सब्जी खाई, दूध, दही छाछ, लस्सी फल आदि सब कुछ भोजन के रूप में हमने ग्रहण किया। यह सब कुछ हमें उर्जा देते हैं और पेट उस उर्जा को आगे ट्रांसफर करता है।

पेट में एक छोटा सा स्थान होता है, जिसको हम हिन्दी में "आमाशय" कहते हैं। इसका संस्कृत नाम है "जठर"। यह एक थैली की तरह होता है। यह जठर हमारे शरीर में सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि सारा खाना सबसे पहले इसी में आता है। यह बहुत छोटा सा स्थान है। हम जो कुछ भी खाते हैं, वह सब इस आमाशय में आ जाता है। आमाशय में जो अग्नि प्रदीप्त होती है उसे जठराग्नि कहते हैं।

यह जठराग्नि आमाशय में प्रदीप्त होने वाली आग है। जैसे ही हम खाना खाते हैं, जठराग्नि प्रदीप्त हो जाती है। यह ऑटोमेटिक है,जैसे ही हमने रोटी का पहला टुकड़ा मुँह में डाला, कि इधर जठराग्नि प्रदीप्त हो गई। यह अग्नि तब तक जलती है जब तक खाना पचता है। यदि हमने खाना खाते ही गटागट पानी पी लिया और खूब ठंडा पानी पी लिया तो, जो आग (जठराग्नि) जल रही थी, वह बुझ जाती है। आग बुझ जाने के कारण पचने की क्रिया रुक जाती है।

हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि खाना पेट में जाने पर पेट में दो ही क्रियाएं होती हैं, एक क्रिया है जिसको हम कहते हैं पचना, और दूसरी है सड़ना।

जठराग्नि में यदि आग जलेगी तो खाना पचेगा, खाना पचेगा तो उससे रस बनेगा। रस से मांस, मज्जा, रक्त, वीर्य, हड्डियां, मल, मूत्र और अस्थि बनेगा और सबसे अंत में मेद बनेगा। यह तभी होगा जब खाना पचेगा। खाना सड़ने पर सबसे पहला जहर जो बनता है वह है यूरिक एसिड। यूरिक एसिड बढ़ने से ही घुटने, कंधे, कमर में दर्द होता है। जब खाना सड़ता है, तो यूरिक एसिड जैसा ही एक दूसरा विष बनता है जिसको हम कहते हैं एलडीएल (खराब कोलस्ट्रॉल)। खराब कोलस्ट्रॉल के बढ़ने से ही ब्लड प्रेशर (बीपी) बढ़ता है। ये सभी बीमारियां तब आती हैं जब खाना पचता नहीं है, बल्कि सड़ता है।

खाना पचने पर किसी भी प्रकार का कोई भी जहर नहीं बनता है। खाना पचने पर जो बनता है वह है मांस, मज्जा, रक्त, वीर्य, हड्डियां, मल, मूत्र, अस्थि और खाना नहीं पचने पर बनता है यूरिक एसिड, कोलेस्ट्रोल, एलडीएल, वीएलडीएल और यही हमारे शरीर में रोगों का घर बनाते हैं। पेट में बनने वाला यही जहर जब ज्यादा बढ़कर खून में आता है, तो खून दिल की नाड़ियों में से निकल नहीं पाता और रोज थोड़ा–थोड़ा कचरा जो खून में आया है, इकट्ठा होता रहता है और एक दिन नाड़ी को ब्लॉक कर देता है। इसी से हार्ट अटैक होता है।

अतः हमें ध्यान इस बात पर देना चाहिए कि जो हम खा रहे हैं, वह ठीक से पचना चाहिए, इसके लिए पेट में ठीक से आग (जठराग्नि) प्रदीप्त होनी ही चाहिए, क्योंकि बिना आग के खाना पचता नहीं है और खाना पकता भी नहीं है। महत्व की बात खाने को खाना नहीं खाने को पचाना है। हमने क्या खाया, कितना खाया यह महत्त्वपूर्ण नहीं है। खाना अच्छे से पचे इसके लिए वाग्भट्ट जी ने सूत्र दिया है – "भोजनान्ते विषं वारी" अर्थात् खाना खाने के तुरंत बाद पानी पीना जहर पीने के बराबर है। इसलिए खाने के तुरंत बाद पानी कभी नहीं पीना चाहिए। जब हम खाना खाते हैं तो जठराग्नि द्वारा सब एक दूसरे में मिक्स होता है और फिर खाना पेस्ट में बदलता है। पेस्ट में बदलने की क्रिया होने तक एक घंटा 48 मिनट का समय लगता है। उसके बाद जठराग्नि कम हो जाती है। बुझती तो नहीं, लेकिन बहुत धीमी हो जाती है। पेस्ट बनने के बाद शरीर में रस बनने की प्रक्रिया शुरू होती है, तब हमारे शरीर को पानी की आवश्यकता होती है।

– घनश्याम मुरारी

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2024-26
Licence to Post without Pre-Payment of Postage. U (C)-289/2024-26

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी, सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- www.facebook.com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
दूरभाष : 011-23274771, 42415359

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

एस.एस. डी.ए.वी. सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल एवं किड्स केयर इण्टरनेशनल स्कूल का वार्षिक पारितोषिक पुरस्कार वितरण समारोह भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

बच्चों का शिक्षित होने के साथ–साथ संस्कारवान होना आवश्यक है – स्वामी आर्यवेश

बच्चे राष्ट्र का भविष्य होते हैं – स्वामी आदित्यवेश

अपने जीवन का लक्ष्य बनाकर चलने वाला विद्यार्थी ही सफलता को प्राप्त करता है – जसकरणजीत सिंह

दिनांक 19, 20 व 21 दिसम्बर, 2025 तक एस.एस. डी.ए.वी. सीनियर सेकेंडरी स्कूल अवांखा, दीनानगर एवं किड्स केयर इण्टरनेशनल स्कूल का वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। समारोह में युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, प्रिं. जसकरणजीत सिंह जी, एवं श्री सुमन कुमार खजूरिया जी विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे। स्कूल के प्रबन्ध समिति के प्रधान श्री अरविन्द मेहता जी एवं कार्यकारिणी की अन्य सदस्यों ने आगन्तुक अतिथियों स्मृति चिन्ह एवं शॉल भेंटकर स्वागत किया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी एवं विशिष्ट अतिथि स्वामी आदित्यवेश जी, श्री सुमन कुमार खजूरिया जी, श्री अरविन्द मेहता जी, कार्यकारिणी की सचिव श्रीमती मधुर भाषिणी जी, डॉ. कमलेश शर्मा जी आदि ने दीप प्रज्जवलित किया।

स्कूल में विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं देशभक्ति से ओत–प्रोत गीत एवं नाटक प्रस्तुत कर उपस्थित अभिभावकों एवं दर्शकों को अत्यन्त प्रभावित किया।

इस त्रिदिवसीय पुरस्कार वितरण समारोह में स्वामी आर्यवेश जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि बच्चों को शिक्षित होने के साथ–साथ संस्कारवान होना आवश्यक है। इस संस्थान में बच्चों को संस्कारित करने के विशेष प्रयास किये जा रहे हैं जो अत्यन्त प्रशंसनीय हैं।

स्वामी आदित्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में बच्चों को राष्ट्र का भविष्य बताते हुए उन्हें देशभक्त एवं माता–पिता का भक्त होने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि बच्चे अपने से बड़ों से सीखते हैं इसलिए बड़े लोगों को बच्चे के समक्ष ऐसा व्यवहार करना चाहिए जिससे उन्हें प्रेरणा मिले।

प्रिं. जसकरणजीत सिंह जी ने उपस्थित छात्र एवं छात्राओं को प्रेरित करते हुए कहा कि अपने जीवन का लक्ष्य बनाओ। लक्ष्य बनाने वाला व्यक्ति ही जीवन में सफलता प्राप्त करता है।

श्री सुमन कुमार खजूरिया ने नैतिक शिक्षा पर बल दिया और कहा कि बच्चों को प्रारम्भ से ही नैतिक मूल्यों से अवगत करा देना चाहिए ताकि उनका व्यक्तित्व इन मूल्यों से ओत–प्रोत हो सके।

समारोह में एस.एस.डी.ए.वी. सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल की प्रधानाचार्या श्रीमती रचना सैनी एवं किड्स केयर इण्टरनेशनल की प्रधानाचार्या श्रीमती प्रोमिला मनहास, शिक्षा सलाहकार श्री सुशील कुमार छठी से 10वीं कक्षा की इंचार्ज श्रीमती भारती शर्मा एवं पायल शर्मा आदि ने अपने–अपने विद्यालयों की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा अतिथियों एवं अभिभावकों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यक्रम में स्कूल कार्यकारिणी के अध्यक्ष श्री अरविन्द मेहता, मंत्री श्रीमती मधुर भाषिणी, प्रबन्धक श्री राजन मेहता, पूर्व प्रधानाचार्य डॉ. कमलेश शर्मा, श्री तरसेम लाल आर्य, श्री जितेन्द्र त्रेहन, श्री विजय कांसरा, श्री स्वरूप कृष्ण, श्री जितेन्द्र महाजन, श्री सतपाल शर्मा, श्रीमती भूमिका मेहता, श्रीमती निधिमा गोयल, श्रीमती सुमति खुल्लर, श्रीमती सुमेधा, एडवोकेट श्री सुवीर महाजन, श्री संदीप सिंह पी.आर. ओ., श्री दीपक महाजन एवं अन्य गणमान्य सदस्यों की गरिमामयी उपस्थिति रही। मंच संचालन का दायित्व श्रीमती रेनू एवं अमिता बैंस ने निभाया। कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व सम्पादक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा मुद्रक - थॉमस पुलटू एवं मुद्रणालय - ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771, 42415359)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।